5. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :4+4=8

(स) मृदु मंद-मंद, मन्थर-मन्थर
लघु तरणि हंसिनी-सी सुन्दर
तिर रही, खोल पालों के पर।
निश्चल जल के शुचि दर्पण पर
बिम्बित हो रजत-पुलिन निर्भर
दुहरे ऊँचे लगते क्षण-भर।

(द) सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

इकाई - तीन

6. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं के आधार पर यह प्रमाणित कीजिए कि वे भारतीय संस्कृति के संवाहक हैं। 7

7. छायावादी कवि के रूप में प्रसाद के काव्य का मूल्यांकन कीजिए। 7

इकाई - चार

8. 'दिनकर' के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए। 7

9. पंत की प्रगतिवादी रचनाओं में मानवमूल्यों का समावेश है।' सोदाहरण विश्लेषण कीजिए। 7

A **(Printed Pages 4)**

A-195

बी. ए. (द्वितीय वर्ष) परीक्षा, 2015

(रेगुलर)

हिन्दी

प्रथम प्रश्न-पत्र

(आधुनिक हिन्दी काव्य)

समय : तीन घण्टे पूर्णांक : 50

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। तथा चारों इकाइयों में से प्रत्येक से **एक-एक** प्रश्न करना आवश्यक है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 2×10=20

(क) खड़ी बोली के चार महाकाव्यों के नामों का उल्लेख कीजिए।

(ख) मैथिलीशरण की चार रचनाओं के नाम लिखिए।

(ग) छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(घ) सुमित्रानंदन पंत की चार रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

(ङ) आधुनिक मीरा किसे कहते हैं? उनकी दो काव्य कृतियों का उल्लेख कीजिए।

(च) 'वह तोड़ती पत्थर' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(छ) गीति काव्य की दृष्टि से महादेवी के काव्य की चार विशेषताएँ लिखिए।

(ज) 'इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम' का भाव स्पष्ट कीजिए।

(झ) ''आँसू'' के आलम्बन पर प्रकाश डालिए।

(ञ) 'दिनकर' की चार कृतियों का नाम ।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिएः4+4=8

(क) स्वावलम्ब की एक झलक पर
न्यौछावर कुबेर का कोष।
सांसारिकता में मिलती है
यहाँ निराली निस्पृहता
अत्रि और अनसूया की - सी
होगी यहां पूण्य-गृहता
मानो है यह भुवन भिन्न ही,
कृत्रिमता का नाम नहीं,

(ख) नीरव निशीथ में लतिका सी
तुम कौन आ रही हो बढ़ती?
कोमल बाहें फैलाये-सी
आलिंगन का जादू पढ़ती

3. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिएः4+4=8

(ग) दिये है मैंने जगत् को फूल-फल,
किया है अपनी प्रभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल-
ठाठ जीवन का वही
जो ढह गया है।

(घ) सबका निचोड़ लेकर तुम
सुख से सुखे जीवन में
बरसो प्रभात हिम कन-सा
आँसू इस विश्व सदन में।

इकाई - दो

4. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :4+4=8

(अ) मैं नव मानवता का संदेश सुनाता,
स्वाधीन लोक की गौरव गाथा गाता
मैं मनः क्षितिज के पार मौन शाश्वत की,
प्रज्वलित भूमिका ज्योतिवाह बन आता।
युग के खँडहर पर डाल सुनहली छाया,
मैं नव प्रभात के नभ में उठ मुस्काता
जीवन पतझर में जन-मन की डालों पर
मैं नव मधु के ज्वाला पल्लव सुलगाता।

(ब) रजत रश्मियों की छाया में,
धूमिल धन सा बह जाता
इस निदाघ से मानव में
करूणा के स्रोत बहा जाता
उसमें मर्म छिपा जीवन का
एक तार अगणित कम्पन का
एक सूत्र सबके बन्धन का
संसृति के सूने पृष्ठों में करूण काव्य वह लिख जाता।